परिचय करना लाभप्रद होगा।

आल्फ्रेड एडलर (Alfred Adler, 1870-1935)

आल्फ्रेड ऐडलर (Alfred Adler) का जन्म १८७० ई० के २ फरवरी को वियाना (Vienna) के निकट हुआ। ऐडलर बचपन में बहुत बीमार रहते थे और चार वर्ष की आयु में उन्हें चलना आया। उनका अपना कथन है कि वे बचपन में खुश नहीं रहते थे। स्वास्थ्याभाव के अतिरिक्त उन्हें इस बात की भी चिन्ता रहती थी कि वे अपने बड़े भाई के समान महान नहीं बन सकेंगे। उनकी माँ बड़े बेटे को अधिक प्यार देती थीं और अल्फ्रेड को पिता अधिक मानते थे। इन कठिनाइयों के बावजूद ऐडलर बड़े सामाजिक स्वभाव के थे। १८९५ ई० में ऐडलर ने चिकित्सा (medicine) में उपाधि ली। नेत्रविज्ञान (ophthalmology) में विशेषज्ञता प्राप्त करके उन्होंने सामान्य चिकित्सा-व्यवसाय आरम्भ किया और यहीं से मनश्चिकित्सा (psychiatry) की ओर आए। फ्रायड से उनका सम्पर्क १९०२ ई० के आस-पास हुआ जो क्रमशः मजबूत होता गया और वे फ्रायडवादी समूह के एक प्रतिष्ठित सदस्य हो गए। धीरे-धीरे ऐडलर फ्रायड से भिन्न विचार विकसित करने लगे जिसका आभास फ्रायड को हुआ और उन्हें खुश करने के लिए १९१० ई० उन्हें वियाना विश्लेषणवादी समिति का अध्यक्ष बना दिया परन्तु १९११ ई० में दोनों पूर्ण रूप-से अलग हो गए।

1. "It is not easy to change the architonic structure of a castle. Freud was a master in the art of logical thinking and his system was a formidable structure erected by the human mind.....As long as one follows the line of Freud's thinking.....the entire building is well preserved and perhaps improved. But as soon as one rejects any of the fundamental concepts, the entire building crumbles."

—Wolman, p. 383

ऐडलर और फ्रायड क

ऐडलर और फ्राय

(i) व्यवहार उ
मानते थे जबकि ऐडल

(ii) दोनों के बी
व्यक्तित्व का मनोविज्ञ
देखते थे जैसे चेतन,
इसके विपरीत ऐडलर
एकल स्वरूप पर बल
हुआ कि उन्होंने विश्ले

(iii) फ्रायड औ
ने मानव व्यवहारों क
उपज माना। इसके
(social forces) क
को समझने के लिए
के प्रति कैसी अभिवृ
बच्चे का पहला सम्प
में बच्चे की अभिरु
यह माँ की अपनी
की समस्त जन्मजात
सहयोग (cooper
आदि की ओर मो

फ्रायड से अलग होने का मुख्य कारण, जैसा कि ऐडलर ने बताया, फ्रायडवाद में यौन-वृत्ति की भूमिका सम्बन्धी अतिशयोक्ति था। फ्रायड से अलग होकर ऐडलर ने अपना स्वतंत्र विचार तंत्र प्रस्तुत किया जो व्यक्ति मनोविज्ञान (Individual Psychology) कहलाया। प्रथम महायुद्ध में ऐडलर ने ऑस्ट्रिया की सेना में काम किया और बाद में वियना के स्कूलों में बाल निर्देशन केन्द्रों (child guidance clinics) की स्थापना की। १९२० ई० से ऐडलर के विचारों को व्यापक मान्यता मिलने लगी और बहुत से विद्यार्थी उनसे पढ़ने आए। १९२६ ई० में उन्होंने अमरीका की यात्रा की जहाँ उन्हें बहुत सम्मान मिला। १९३४ ई० में अन्य यहूदी विज्ञानियों के समान ऐडलर भी ऑस्ट्रिया से भागकर अमरीका में बस गए और उन्हें एक चिकित्सा महाविद्यालय में प्रोफेसर बनाया गया। १९३७ ई० में स्कॉटलैण्ड में एक लम्बे व्याख्यान क्रम में २८ मई को अबर्डीन (Aberdeen) नामक नगर में उनका देहावसान हुआ। इस समय तक फ्रायड से उनकी दूरी इतनी बढ़ चुकी थी कि जब उनके एक मित्र ने ऐडलर की मृत्यु पर शोक व्यक्त किया तो फ्रायड ने खिन्न होकर कहा कि यह दुख की बात नहीं है, क्योंकि वियना के देहात के इस यहूदी बच्चे को मनोविश्लेषण का विरोध करने के लिए दुनियावालों ने बहुत अधिक पुरस्कृत किया। फ्रायड भी इस समय मृत्यु के निकट थे, ऐडलर उनसे १५ वर्ष छोटे थे, फिर भी इतना कठोर दृष्टिकोण ऐडलर के प्रति उनके क्रोध का सूचक है।

ऐडलर और फ्रायड के भेद (differences) :

ऐडलर और फ्रायड के सम्बन्ध दीर्घजीवी नहीं हो सके, इसके कई कारण हुए—

(i) व्यवहार उत्पन्न करने में फ्रायड व्यक्ति के अतीत (past) की भूमिका मानते थे जबकि ऐडलर ने भविष्य (future) की भूमिका को महत्वपूर्ण माना।

(ii) दोनों के बीच विचारों का दूसरा बड़ा भेद यह था कि फ्रायड ने सम्पूर्ण व्यक्तित्व का मनोविज्ञान अवश्य दिया परन्तु वे व्यक्तित्व को अंशों में बाँटकर देखते थे, जैसे चेतन, अवचेतन और अचेतन, या इदम, अहम और पराहम, इत्यादि। इसके विपरीत ऐडलर ने सदा सम्पूर्ण व्यक्तित्व अथवा व्यक्तित्व की समग्रता अथवा एकल स्वरूप पर बल देते थे। उनके विचारतंत्र का नामकरण भी इसी आधार पर हुआ कि उन्होंने विश्लेषण छोड़कर सम्पूर्ण व्यक्ति को अध्ययन का विषय मानी।

(iii) फ्रायड और ऐडलर के विचारों में भेद का एक आधार यह था कि फ्रायड ने मानव व्यवहारों को जैविक स्वरूप की सहज-वृत्ति (biological instincts) की उपज माना। इसके विपरीत ऐडलर ने मानव व्यवहारों को सामाजिक शक्तियों (social forces) का परिणाम माना। ऐडलर का विश्वास है कि मानव व्यक्तित्व को समझने के लिए उसके सामाजिक सम्बन्धों का अन्वेषण किया जाए कि वह दूसरों के प्रति कैसी अभिवृत्तियाँ (attitudes) रखता है। उन्होंने कहा कि जन्म के समय बच्चे का पहला सम्पर्क उसकी अपनी माँ से होता है, फिर धीरे-धीरे माँ ही दूसरे व्यक्तियों से बच्चे की अभिरुचि विकसित कराती है। ये सामाजिक सम्बन्ध कितने स्वस्थ्य होंगे, यह माँ की अपनी कुशलता पर निर्भर है। यदि वह कुशल प्रशिक्षक हुई तो बच्चे की समस्त जन्मजात और अर्जित योग्यताओं को सामाजिक बोध (social sense) जैसे- सहयोग (cooperation), सहानुभूति (sympathy), रचनात्मकता (creativity), आदि की ओर मोड़ देगी। इससे स्पष्ट है कि ऐडलर ने फ्रायड ही के समान व्यक्तित्व

विकास में जीवन के प्रारम्भिक वर्षों का महत्व माना, अन्तर यह रहा कि फ्रायड ने प्रारम्भिक वर्षों की जैविक प्रवृत्तियों पर बल दिया और ऐडलर ने सामाजिक अनुभव और अधिगम पर। विज्ञानों को यदि प्राकृतिक (natural) और सांस्कृतिक (cultural) वर्गों में बाँटें तो फ्रायड प्राकृतिक वर्ग में और ऐडलर सांस्कृतिक वर्ग में आएँगे।

(iv) फ्रायड और ऐडलर के विचारों में एक बड़ा भेद यह भी है कि फ्रायड ने अचेतन (unconscious) को मानव व्यवहारों का निर्धारक माना जबकि ऐडलर ने व्यवहारों में चेतन (consciousness) के महत्व पर बल दिया। ऐडलर मानते हैं कि मनुष्य मूलतः एक चेतन प्राणी है और वह अपने सभी अभिप्रेरकों को जानता-समझता है। प्रत्येक व्यक्ति के कुछ निश्चित लक्ष्य होते हैं जिन्हें वह भविष्य में प्राप्त करना चाहता है। उनके अनुसार व्यक्ति के भावी लक्ष्य ही उसके वर्तमान व्यवहारों को निर्धारित करते हैं। भविष्य के सम्बन्ध में व्यक्ति के जो अपने पूर्वानुमान होते हैं उनसे उसके वर्तमान व्यवहार व्यापक रूप से प्रभावित और निर्धारित होते हैं।

(v) ऐडलर और फ्रायड के बीच इस बात पर भी मतभेद है कि फ्रायड के अनुसार मन (mind) का प्रभाव शरीर पर पड़ता है जबकि ऐडलर ने अपने चिकित्सा प्रशिक्षण का प्रभाव स्वीकारते हुए मन पर शरीर (body) का प्रभाव माना। उन्होंने अपने प्रारम्भिक लेखों में दावा किया कि वातावरण के साथ व्यक्ति का अच्छा, बुरा या औसत अभियोजन अथवा व्यवहार उसकी ऐन्द्रीय हीनता (organic inferiority) की भावना से उत्पन्न होता है। इसके विपरीत फ्रायड का विश्वास है कि मन के दमित घातज (traumatic) अनुभव अनेकानेक प्रकार के ऐन्द्रीय रोग उत्पन्न करते हैं, जैसा कि उन्होंने हिस्टीरिया के अध्ययनों में प्रदर्शित किया।

हीनता (inferiority) और उसकी क्षतिपूर्ति (compensation) :

ऐडलर का विश्वास है कि प्रत्येक मानव व्यक्ति में हीनता की भावना होती है और यही हीनता भाव उसमें विभिन्न प्रकार के व्यवहार उत्पन्न करता है। आरम्भ में ऐडलर ने इस हीनता भाव को शरीर के किसी अंग के दोष का परिणाम माना। आगे चलकर ऐडलर ने किसी भी शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक बाधा (handicap) को हीनता भाव का कारण माना। उनका विश्वास है कि बच्चा को जिस बाधा का अनुभव होता है उससे सम्बन्धित क्षतिपूर्ति (compensation) के प्रयास बढ़ा देता है, जैसे-एक कमजोर और बीमार बच्चा अच्छा होने पर इतना शारीरिक व्यायाम करता है कि वह पहलवान हो जाता है। जो अपराधकर्मी अपनी पुरानी जीवन-शैली छोड़ता है वह प्रायः साधु-सन्त और उच्च कोटि का समाज-सुधारक हो जाता है। ऐडलर के अनुसार हीनता-भाव का कारण वास्तविक भी हो सकता है और काल्पनिक भी। ऐडलर ने दावा किया कि प्रत्येक व्यक्ति में हीनता-भाव का होना आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक वयस्क अपना बचपन काट चुका है जब वह अत्यधिक निरीह और दूसरों पर आश्रित और सामान्य रूप-से असुरक्षित था। इस विश्वास के कारण ऐडलर के विचार-तंत्र में एक विसंगति उत्पन्न होती है। ऐडलर ने मानव-व्यवहारों की उत्पत्ति भविष्य के लक्ष्य प्राप्त करने के लिए माना परन्तु वास्तव में उन्होंने असहाय बच्चों की हीनता भाव को अगले व्यवहारों का कारण बताया। स्पष्ट है कि उन्होंने वर्तमान व्यवहारों का कारण अतीत में माना और फ्रायड भी ऐसा ही मानते थे।

ऐडलर के अनुसार हीनता भाव को समाप्त करने के लिए बच्चों में श्रेष्ठ बनने की इच्छा भी जन्मजात रूप-से वर्तमान रहती है। निष्कर्ष यह कि बच्चों को अपनी वास्तविक अथवा काल्पनिक हीनताओं का चेतन बोध रहता है जिसे समाप्त करने के लिए वह क्षतिपूर्त्ति व्यवहार करता है और यह प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है जिस कारण व्यक्ति ऊँचे से ऊँचे लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है। व्यक्ति के क्षतिपूर्ति सम्बन्धी प्रयासों से न केवल उस व्यक्ति का लाभ और उत्थान होता है बल्कि उसके कार्य कलापों से सम्पूर्ण समाज लाभान्वित होता है। ऐडलर का यह भी मानना है कि यदि बाधित बच्चों को आरम्भ में ही उसके परिवार अथवा समाज ने अस्वीकार कर दिया या उसके माता-पिता ने उसका लाड-प्यार बहुत बढ़ा दिया तो उसमें असामान्य व्यवहारों के उत्पन्न होने की सम्भावना बढ़ जाएगी।

श्रेष्ठता की चाह (striving for superiority) :

ऐडलर ने व्यक्तित्व को सुसंगत इकाई के रूप में माना और यह विश्वास किया कि सुगठित व्यक्तित्व अपने समस्त उपलब्ध साधनों को किसी ऊँचे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हर समय सक्रिय ढंग से लगाता रहता है ताकि वह उच्च स्तर की श्रेष्ठता प्राप्त कर सके। ऐडलर ने यह माना कि व्यक्ति सुख की खोज में रहता है परन्तु यह मानने से इनकार किया कि सुख की खोज ही मानव जीवन का एकमात्र अभिप्रेरक है। उन्होंने फ्रायड का यह विचार भी नहीं माना कि आत्म-रक्षा और अपने जाति-प्रकार (species) की रक्षा ही मानव-जीवन के मुख्य अभिप्रेरक हैं। उनके अनुसार मनुष्य का मुख्य अभिप्रेरक है स्वाभिमान (self-esteem) की निरन्तर वृद्धि, हीनता की भावना से मुक्त होना, श्रेष्ठ बनने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहना और आत्म सिद्धि (self-realisation) प्राप्त करना।

ऐडलर के अनुसार श्रेष्ठता प्राप्त करने की इच्छा जन्मजात होती है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शरीर के विकास के साथ-साथ चलती रहती है। कम से अधिक होने की इच्छा तो सभी व्यक्तियों को उपलब्धि के सभी क्षेत्रों में होती है, ऊपर उठने की इच्छा मानव जीवन, संस्कृति और सभ्यता का परम सत्य है। ऐडलर का विश्वास है कि श्रेष्ठ बनने की इच्छा हीनता की भावना से जन्म लेती है।

जीवन शैली (style of life) :

मनुष्य का प्राथमिक अभिप्रेरक है हीनता की भावना (inferiority feeling) जिससे उभरती है श्रेष्ठता की चाह (striving for superiority)। ये दोनों सम्बन्धित अभिप्रेरक ऐडलर के अनुसार विश्वव्यापक हैं। श्रेष्ठता की खोज विश्वव्यापक और जन्मजात अवश्य है परन्तु उत्कृष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के रास्ते सभी व्यक्तियों में अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की अपूर्व (unique) शैलियाँ विकसित कर लेता है, मानो एक ही मंजिल तक पहुँचने के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपना विशिष्ट रास्ता चुन लेता है। ऐडलर के अनुसार व्यक्तियों के बीच जीवन शैली का यह भेद चार-पाँच वर्ष की आयु से प्रकट होने लगता है। जीवन-शैली का लक्ष्य हीनता-भाव की क्षतिपूर्त्ति होता है और जब जीवन-शैली निश्चित हो जाती है तो उसे बदलना कठिन हो जाता है। स्पष्ट है कि फ्रायड ही के समान ऐडलर ने भी व्यक्तित्व-निर्माण में जीवन के

प्रारम्भिक वर्षों की महत्वपूर्ण भूमिका मानी। उनके अनुसार यदि माता-पिता समझदार हैं तो क्षतिपूर्त्ति की इस प्रक्रिया में प्रत्येक बच्चा अपनी कमजोरियों को मजबूतियों में बदल सकता है। बच्चों का अत्यधिक लाड-प्यार और अत्यधिक तिरस्कार, दोनों ही ऐसी जीवन-शैली के विकास में बाधक हो जाते हैं जो क्षतिपूर्त्ति को पूरी तरह सफल नहीं होने देते।

ऐडलर के अनुसार व्यक्ति की जीवन-शैली ही उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व है जो विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहारों को निर्धारित करती है। ऐडलर की यही जीवन-शैली फ्रायड के यहाँ अहम् (ego) है, परन्तु दोनों में बड़ा भेद है। फ्रायड का 'अहम्' व्यक्ति के इदम (id) से निकलता है और फिर अहम से पराहम (superego) की व्योत्पत्ति होती है। ऐडलर ने पूरा बल अहम पर ही दिया और लक्ष्य से सम्बन्धित अहम को ही जन्मजात सर्जनात्मक शक्ति (innate creative force) माना। इसी विश्वास से सम्बन्धित ऐडलर का वातावरण-सम्बन्धी दृष्टिकोण है। ऐडलर ने जीवन-शैली के निर्माण में वातावरण (environment) पर भी विचार किया है परन्तु वे वातावरणवादी (environmentalist) नहीं हैं, अर्थात व्यवहारों के निर्धारण में वातावरण की भूमिका नहीं मानते हैं। उनके अनुसार व्यक्ति का कोई अनुभव उसके जीवन-लक्ष्यों को निर्धारित नहीं करता है बल्कि उसके जीवन-लक्ष्य ही उसके अनुभवों के अर्थ प्रदान करते हैं।

ऐडलर के अनुसार व्यक्ति की जीवन-शैली से ही उसका सर्जनात्मक अहम् (creative self) उभरता है। सर्जनात्मक अहम् सम्पूर्ण व्यक्तित्व की आत्मा है अर्थात् अस्तित्व (existence) को बनाए रखने वाला सक्रिय नियम है। ऐडलर ने कहा कि आनुवंशिकता (heredity) और वातावरण (environment) की ओर से व्यक्ति को कुछ योग्यताएँ और कुछ अनुभव मिलते हैं जिनसे वह अपनी विशिष्ट सर्जनात्मकता द्वारा जीवन के प्रति अभिवृत्तियाँ (attitudes) बनाता है। समान योग्यताओं एवं अनुभवों से भी सर्जनात्मक अहम् अलग-अलग ढंग के विकसित होते हैं, जैसे समान ईंटों से अलग-अलग ढंग के मकान बनते हैं। सर्जनात्मक अहम् की संकल्पना में ऐडलर ने यह दावा किया कि व्यक्ति एक चेतन शक्ति के रूप में अपने व्यक्तित्व अथवा भाग्य का निर्माण स्वयं करता है।

ऐडलरवाद और सामाजिकता (sociability)

व्यक्तित्व के विकास में समाज की भूमिका पर फ्रायड और ऐडलर के बीच बहुत स्पष्ट भेद है। फ्रायड ने वृत्यात्मक शक्तियों (instinctual forces) और वातावरण की शक्तियों के बीच परस्पर अन्तःक्रिया के फलस्वरूप विभिन्न विकासात्मक अवस्थाओं में व्यक्तित्व के विकास की बात की। उन्होंने व्यक्ति को पूर्ण इकाई मानकर उसे अवरोधक अथवा प्रोत्साहक समाज में रखा। ऐडलर ने समाज की प्राथमिकता मानी और कहा कि समाज पहले से रहता है जिसमें कोई व्यक्ति आता है। उनके अनुसार समाज असहाय बच्चे की पहली आवश्यकता है, इसलिए बच्चा के जन्म से पहले ही समाज वर्तमान रहता है। ऐडलर के अनुसार दूसरों के साथ सहयोग करना, सामाजिक अभिरुचि अथवा सामाजिकता व्यक्ति की जन्मजात पूँजी होती है जिसे बच्चा बहुत आगे तक विकसित करता है। उनका यह भी मानना है कि श्रेष्ठता की चाह और सामाजिकता के बीच ताल-मेल कराना आवश्यक होता है, और

कहीं कहीं तो सामाजिकता के लिए श्रेष्ठता-भावना को त्यागना पड़ता है। फ्रायड ने कहा कि व्यक्ति की आवश्यकता है दूसरों को प्रेम देना। इसके विपरीत ऐडलर ने कहा कि व्यक्ति की आवश्यकता है दूसरों से प्रेम पाना। स्पष्ट है कि ऐडलर ने सामाजिकता (sociability) को लैंगिकता (sexuality) से अलग कर दिया जब कि फ्रायड ने लैंगिकता को ही सामाजिकता का आधार माना था।

फ्रायड ने बच्चों के सामाजीकरण (socialisation) प्रक्रिया में दमन (repression), प्रतिक्रिया रचना (reaction formation), उद्देश्य का अवरोधन (aim inhibition), पराहम-निर्माण (superego formation), आदि की भूमिका माना। ऐडलर के अनुसार ये सारी बातें बेकार हैं। उनके अनुसार ओडिपस कम्पलेक्स (Oedipus complex) कुछ संस्कृतियों में हो सकता है, सब में नहीं, और यह भी कि यह कम्पलेक्स पालन-पोषण के दोष से उत्पन्न होता है। सामाजिकता के सम्बन्ध में ऐडलर ने यह भी कहा कि नवजात बच्चे में आत्ममोह (narcissism) अथवा अपने-आप से प्रेम नहीं होता बल्कि वह दूसरों को प्रेम देता है। फ्रायड ने नवजातों में आत्ममोह माना था।

जन्मक्रम (birth order) का महत्त्व :

ऐडलर ने अपने रोगियों के इलाज के क्रम में यह महसूस किया कि उनके व्यक्तित्व और जन्मक्रम के बीच गहरा सम्बन्ध है। उन्होंने देखा कि सबसे बड़े, बीचवाले और सबसे छोटे बच्चे व्यक्तित्व की विशेषताओं में एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न होते हैं। उनके अनुसार इस व्यक्तित्व-भेद का कारण यह है कि सबसे बड़ा बच्चा दूसरे बच्चे के जन्म लेने तक सबों के ध्यान का केन्द्र बना रहता है परन्तु दूसरा बच्चा आते ही उसका यह स्थान छिन जाता है जिस कारण उसमें असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो जाती है और वह दूसरों के प्रति आक्रमणशील (hostile) हो जाता है। ऐडलर के अनुसार अपराधी, तंत्रिका रोगी (neurotics) और शराबी प्रायः परिवार के ज्येष्ठ बच्चे होते हैं : उनके अनुसार दूसरा बच्चा उच्चाकांक्षी, विद्रोही और डाही होता है और हर समय यह प्रयास करता है कि बड़े को पराजित करता रहे। इसके बावजूद ऐडलर ने इन बच्चों को अधिक समंजित माना है। उनके अनुसार सबसे छोटा बच्चा बिगड़ा हुआ होता है और बचपन से वयस्क होने तक विभिन्न प्रकार के समस्यात्मक व्यवहार दर्शाता है।

व्यक्तित्व प्रकार (personality types) :

ऐडलर के अनुसार मानव व्यक्तियों को विभिन्न वर्गों में बाँटना उचित नहीं है, फिर भी सुविधाओं के लिए उन्होंने १९२७ ई० में हिप्पुक्रेटस (Hippocrates, 460-370 B.C) के वर्गीकरण को माना—आशावादी (sanguine), क्रोधी (choleric), विषादी (melancholic) और भाव-शून्य (phlegmatic)। उनके अनुसार आशावादी का व्यक्तित्व सर्वाधिक संतुलित होता है क्योंकि उसे वंचनाएँ (deprivations) तथा अपमान कम मिली हैं जिस कारण उसमें हीनता का भाव बहुत कम होता है फलस्वरूप वह सहज श्रेष्ठता की ओर बढ़ता है। क्रोधी प्रायः तनावपूर्ण और आक्रमणशील रहते हैं। वह अपने लक्ष्य बड़े आक्रामक ढंग से प्राप्त करता है और सामाजिक अभियोजन कमजोर होता है। विषादी बहुत तीव्र हीनता भाव से ग्रसित रहता है जिस कारण वह बाधाओं को मार्ग से हटाने का साहस ही नहीं

करता है। वह असामाजिक तो नहीं होता परन्तु उसमें आत्मविश्वास बहुत कम रहता है। भाव-शून्य व्यक्ति का जीवन से सम्पर्क टूट जाता है, उदास रहता है और अपनी स्थिति सुधारने में असमर्थ रहता है।

१९३५ ई० में ऐडलर ने अपने विचार-तंत्र के अनुरूप व्यक्तित्व का विभाजन किया जिसका आधार सक्रियता की मात्रा और सामाजिक अभिरुचि को बनाया गया। उनका पहला वर्ग शासक प्रकार (ruling type) है जो क्रोधी के समान है। दूसरा वर्ग उन्होंने याचक प्रकार (getting type) का बनाया जो भाव-शून्य प्रकार के समान है। विषादी प्रकार के समान उन्होंने पलायन प्रकार (avoiding type) बनाया और आशावादी प्रकार के समान उन्होंने समाजोपयोगी प्रकार (socially useful) प्रकार बनाया।

समापन (conclusion) :

फ्रायड के सिद्धान्त से असहमत लोगों की बड़ी संख्या थी। ऐसे लोगों ने ऐडलर का खुला स्वागत किया। फ्रायड ने मनुष्य का निराशावादी चित्र प्रस्तुत किया कि वह बाल्यावस्था के अनुभवों और अचेतन में भण्डारित दमित लैंगिक इच्छाओं के अधीन है। ऐडलर का यह विश्वास कि मनुष्य अपने लक्ष्यों को स्वयं निर्धारित करता है और उसे प्राप्त करने के मार्ग स्वयं चुनता है, बहुत लोगों को बहुत पसन्द आया क्योंकि इन विचारों में आशावाद की झाँकी मिलती थी। मनुष्य को शुद्ध जैविक प्राणी मानना, जैसा कि फ्रायड ने माना, निश्चय ही एक बड़ी भूल है। ऐडलर ने अपने व्यक्ति मनोविज्ञान को सामाजिक शक्तियों से जोड़ा जो मनुष्य का प्रकट रूप निर्धारित करता है।

ऐडलर के विचारों की आलोचनाएँ भी हुई हैं। कुछ लोगों का कहना है कि ऐडलर में फ्रायड-जैसी अन्तर्दृष्टि नहीं थी और उन्होंने सामान्य जनचिन्तन के आधार पर अपने विचारों का प्रतिपादन किया। यह भी कहा गया है कि ऐडलर ने अपने विचारों को पूरी तरह व्यवस्थित नहीं किया जिससे उनके सम्बन्ध के अनेक प्रश्न अनुत्तरित रह जाते हैं, जैसे उन्होंने मनुष्य की सर्जनात्मक शक्ति की बात की और यह स्पष्ट नहीं किया कि इसका स्वरूप क्या है। क्या सभी मनुष्यों में हीनता भाव होता है? क्या सभी लोग क्षतिपूर्त्ति के प्रयास करते हैं? इत्यादि। ऐसा लगता है कि फ्रायड के समान ऐडलर भी पढ़े-लिखे सुसंस्कृत समाज को ही देखकर अपने विचार निश्चित कर रहे थे। ऐडलर ने यह भी स्पष्ट नहीं किया कि विकास में आनुवंशिकता और वातावरण का सापेक्ष महत्त्व क्या है।

प्रयोगों और संख्याओं से विमुख होने का जो दोष फ्रायड पर है वही दोष ऐडलर पर भी है। उन्होंने भी कभी इस बात का प्रयास नहीं किया कि अपने सिद्धान्तों को विज्ञान के सामान्य मापदण्डों पर जाँचें। उनका विश्वास कि जन्मक्रम व्यक्तित्व के स्वरूप अथवा जीवन-शैली को प्रभावित करता है, अनेकानेक अध्ययनों में अप्रमाणित रह गया। इन दोषों के बावजूद ऐडलर की प्रसिद्धि बनी रहेगी क्योंकि बहुत-से नवफ्रायडवादियों ने उनके अनेक विचारों को स्वीकार लिया है।